موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامية – جزء 1

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त1

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَـٰـه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार

हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

आदरणीय पाठक!अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शनकर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

धार्मिक दृष्टिकोण से यह बात निश्चित रूप से ज्ञात है कि आकाशीय शरीअ़तें अल्लाह की ओर से अवतरित हैं,अल्लाह तआ़ला ने प्रत्येक समुदाय में उनकी भाषा बोलने वाला एक रसूल भेजा,ताकि वह उन्हें शरीअ़त पहुंचाएं जो उनके लिए उचित हो,अल्लाह ने उन्हें बिना किसी शरीअ़त के यूं ही बेकार नहीं छोड़ा,अल्लाह का कथन है:

(ولكل قوم **هاد**)

अर्थातः तथा प्रत्येक जाति को सीधी राह दिखाने वाले हैं।

और फरमायाः

(لكل جعلنا منكم **شرعة** ومنهاجا)

अर्थातः हम ने तुम में से प्रत्येक के लिये एक धर्म विधान तथा एक कार्य प्रणाली बना दिया था।

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

मनुष्यों से यह कहा गया है कि वे उन पैगंबरों का अनुगमन करें जिन्हें अल्लाह ने उनकी ओर भेजा,अल्लाह का कथन है:

(وما أرسلنا من رسول إلا **ليطاع** بإذن الله)

अर्थातःऔर हम ने जो भी रसूल भेजा वह इस लिये ताकि अल्लाह की अनुमति से उस की आज्ञा का पालन किया जाये।

अल्लाह तआ़ला ने जो नियम एवं आदेश नाज़िल फरमाए,उनमें सबसे महान तौरैत,इन्जील और क़ुरान हैं,अतः बनी इसराईल से यह परामर्श लिया कि वे अपनी शरीअ़तों की रक्षा करें,किन्तु वे नहीं कर सके,बल्कि उनमें तह़रीफ(हेर फेर)की और उन्हें नष्ट कर दिया,किन्तु क़ुरान की रक्षा का दायित्व अल्लाह ने अपने ऊपर लिया,अल्लाह का फरमान है: (إنا

نحن نزلنا الذكر وإنا له **لحافظون**)

अर्थातःवास्तव में हम ने ही यह शिक्षा(क़ुर्आन)उतारी है,और हम ही उस के रक्षक हैं।

बंदो पर यह अल्लाह का कृपा ही है कि उस ने उनके लिए एक ऐसी शरीअ़त सुरक्षित रखी जिस के आलोक में वे क़्यामत तक अल्लाह की पूजा करते रहेंगे।

समस्त शरीअतें एक अल्लाह की पूजा करने एवं शिर्क से दूर रहने की दावत देती हैं,अल्लाह का फरमान है:

(وما أرسلنا من قبلك من رسول إلا نوحي إليه أنه **لا إله إلا أنا فاعبدون**)

अर्थातःऔर नहीं भेजा हम ने आप से पहले कोई भी रसूल परन्तु उस की ओर यही वहय(प्रकाशना)करते रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है।अतः मेरी ही इबादत(वंदना)करो।

अल्लाह ने और फरमाया:

(ولقد بعثنا في كل أمة رسولا أن اعبدوا الله واجتنبوا الطاغوت)

अर्थातःऔर हम ने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत(वंदना)करो,और तागूत(असुर–अल्लाह के सिवा पूज्यों)से बचो।

शरीअ़तें आंशिक विष्यों में एक दूसरे से भिन्न हैं,किन्तु मूल सिद्धांतों में एक दूसरे से सहमत हैं,और वे सिद्धांत ये हैंःअल्लाह,उसके देवदूत,उसकी पुस्तकें,उसके रसूलों,क़्यामत का दिन और तक़दीर के अच्छे और बुरे होने पे ईमान लाना।

अल्लाह की शरीअ़तें जिन चीजों में एक दूसरे से सहमत हैं,उनमें ये भी हैंःधर्म,सम्मान,जान व माल और बुद्धि की रक्षा।

उपरोक्त मुखबंध के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों लक्षों एवं **उद्देश्यों** को समझने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है,जो व्यक्ति इस प्राक्कथन को समझले,उसके लिए अल्लाह की उसकी नीतिको समझना आसान हो जाएगा जिस के लिए अल्लाह ने शरीअ़तों को नाजिल फरमाया है।

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं

अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा पैगंबरों का श्रृंखला,क़ुरान मजीद के द्वारा पुस्तकों का श्रृंखला और इस्लामी शरीअ़त के द्वारा शरीअ़तों का श्रृंखला समाप्त किया,अल्लाह तआ़ला ने इस्लामी शरीअ़त को अनेक विशेष गुणवक्ताओं से चित्रित फरमाया है,निम्न में अल्लाह की तौफीक़ से उन विशेषताओं पर प्रकाश डाला जा रहा हैः

1.प्रथम विशेषता यह है कि इस्लाम एक एलाही व रब्बानी शरीअ़त है,जबकि इसके अतिरिक्त जितनी भी शरीअ़तें और जीवन प्रणाली आज प्रचलित हैं,वे उन असली एवं अंतर्वेशित शरीअ़तों के विकृत रूप हैं,जो तौही़द की ओर बोलाती हैं,अतःइसाई धर्म में विकृति आगई जिस के कारण वे मसीह को अपना परमेश्वर मानने लगे और सलीब की पूजा करने लगे,यहूदी कुछ नबुवतों

का इंकार करने लगे और ओ़ज़े़र की पूजा करने लगे,ये समस्त शरीअ़तें मनुष्य द्वारा निर्माणित हैं,जिन के अन्दर मूर्ति पूजा पाई जाती है,

रही बात हिन्दू धर्म एवं बुद्धधर्म की तो उनके अनुयायी पत्थरों की पूजा करते हैं,राफज़ी क़ब्रों की पूजा करते हैं,उनका इस्लाम से दूर का भी संबंध नहीं,**यद्यपि** वे स्वयं को मुसलमान कहते फिरते हैं,किन्तु गंभीर्ता तो सत्यों को दिया जाता है नामों को नहीं।

2.इस्लामी शरीअ़त की विशेषता यह है कि वह गलती से मुक्त है,अल्लाह का कथन है:

(لا يأتيه **الباطل** من بين يديه ولا من خلفه تنزيل من حكيم حميد)

अर्थात:नहीं आ सकता झू ठइस के आगे से और न इस के पीछे से।उतरा है तत्वज्ञ प्रशंसित(अल्लाह)की ओर से।

तथा अल्लाह ने और फरमाया:

(وتمت كلمة ربك صدقا وعدلا)

अर्थात:आप के पालनहार की बात सत्य तथा न्याय की है।

अत: कुरान अपनी सूचनाओ में सत्य और अपने आदेशों में न्यायी है।नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस है:(...सर्वोत्तम बात अल्लाह की पुस्तक है और सर्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है)।[2]

3.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह तह़रीफ(हैर फैर)एवं परिवतण से सुरक्षित है,पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दीन में बिदअ़तें अविष्कार करने से मना करते हुए फरमाया:(नई नई बिदअ़तों व नवाचारों से अपने आप को बचाए रखना,निसंदेह हर नई बात बिदअ़त है और हर बिदअ़त

---

[2]इसे मुस्लिम(867)ने वर्णन किया है।

गुमराही है)[3]।इस्लाम के इमामों ने हर काल में ह़दीस की पुस्तकों को ज़ईफ(प्रमाणीकरण की दृष्टिकोण से निर्बल ह़दीस)एवं मोजू(वह ह़दीस जिस के वर्णनकर्ताओं की श्रृंख्ला में कोई छूट बोलने वाला वर्णनकर्ता हो)वणर्नों से पवित्र करने के लिए बहुमूल्य सेवाएं प्रदान की हैं।

4.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह नष्ट होने से सुरक्षित है,कुरान की रक्षा के प्रति अल्लाह का फरमान है: (إنا نحن

نزلنا الذكر وإنا له **لحافظون**)

अर्थातः वास्तव में हम ने ही यह शिक्षा(कुरान)उतारी है,और हम ही उस के रक्षक हैं।

काफिरों की षडयंत्रों,अनेक युद्धों और साजिशों के बावजूद ह़दीसे नबवी अब तक सुरक्षित हैं,जो पीढ़ी दर पीढ़ी और सदी से सदी हम तक चले आ रहे हैं।?

शरीअ़त को नष्ट होने से सुरक्षित रखने का एक उपाय यह है कि अल्लाह ने इस मिशन की पूर्ति के लिए अपनी मख्लूक में से ऐसे लोगों को प्रयोग किया जो इसे नष्ट होने से सुरक्षित रख सकें,उनका तात्पर्य वे विद्वान हैं जो पैगंबरों के उत्तराधिकारी हैं,इसी प्रकार ऐसे नेक शासक और धन व रोसूख वाले भी हैं जिन्हों ने अपनी शक्ति और धन को इस्लाम की सहायता के लिए लगा दिया,वह इस प्रकार कि ज्ञान का प्रचार प्रसार किया और इस मार्ग में(बिना हिसाब के)खर्च किया,अतः मोआ़विया रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(मेरी उम्मत का एक समूह हमेशा अल्लाह के आदेश पर स्थिर रहेगा,जो व्यक्ति उनकी सहायता से दूर होगा,अथवा उनका विरोध करेगा वह अल्लाह के आदेश आने तक उनको

[3]इसे मुस्लिम(867)ने जाबिर रजोअल्लाहु अन्हु से वर्नण किया है

हानि पहुंचा सकेगा और हमेशा लोगों पर प्रभावी(अथवा उनके सामने प्रबल रहेगा)।[4]

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसका शिक्षा स्पष्ट,अपारदर्शिता,रहस्य और भूल भुलैयों से पवित्र हैं,जबकि मानवीय शिक्षा में अवश्य ही यह कमी पाई जाती है,यही कारण है कि शरअ़ी शिक्षाओं को छोटा बडा,छात्र और देहाती भी समझ सकता है।

- इस्लामी शरीअ़त की यह पांच उत्कृष्ट विशेषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिकों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी

---

[4]इसे बोखारी(3641)और मुस्लिम(1037)ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं।

अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तआला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य**।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

लेखकः
मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादकः
फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامية – جزء 2

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त 2

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्र्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार

हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[5]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूको़ं की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के पांच विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

6.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह अंधविश्वासों और निराधार बातों का खंडन करती और उनकी दोषपूर्णता स्पष्ट करती है,इन्ही अंधविश्वासों में से जादू भी है,जिस के द्वारा जादूगर अपनी मुराद की पूर्ति के लिए शैतानों की सहायता लेता है,और शैतान उस समय उसकी सहायता नहीं करता जब तक कि वह उसकी पूजा न करे।

जिन अंधविश्वासों से इस्लाम ने मना किया है,उन में पुराहिताई भी है,इसका तातपर्य गैब के ज्ञान का दावा करना और(पूछने वाले के)दिल की बात बताना है,यह दोनों–जादू एवं पुराहिताई–सख्त ह़राम है,बल्कि इनको अंजाम देना

---

[5]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

इस्लाम रोधक है,क्योंकि गैब का ज्ञान केवल अल्लाह को है,इस लिए कि वह अल्लाह की विशेषताओं में से है,अल्लाह तआ़ला का फरमान हैः

(قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ)

अर्थातःआप कह दें कि नहीं जानता है जो आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को अल्लाह के सिवा।

अतः जिसने अपने लिए गैब के ज्ञान का दावा किया,उसने गैब के ज्ञान की विशेषता में अल्लाह के साथ साझेदारी का दावा किया और क़ुरान को झुटलाया।

7.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह पूर्ण है और जीवन के समस्त मामले उसमे हैं,चाहे श्रद्धा का मामला हो अथवा पूजा पाठ का,मामलात हों अथवा राजनीति,न्याय हो अथवा चरित्र।

- अतः आस्था के विष्य में आस्था के मूल सिद्धांतों पर प्रकाश डालती है,जो कि ये हैंःअल्लाह,उसके देवदूत,उसको पुस्तकें,उसके रसूल,क़्यामत का दिन और तक़दीर के अच्छे और बुरे होने पर ईमान लाना।
  तथा पैगन्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के तकाज़ों को भी बयान करती है,उनमें सबसे महत्वपूर्ण तक़ाजा आपकी पुष्टि और अनुगमन करना है।
- पूजा पाठ के विषय में इस्लामी शिक्षाओं, **हृदय** और शरीर के अंगों की पूजाओं की विस्तार विवरण सम्मिलित है।

  हृदय की प्रार्थनाओं का तात्पर्यःधैर्य,भय,आशा,विश्वास,तौबा और प्रेम इत्यादि हैं।जबकि शरीर के अंगों की पूजाओं मेंःपवित्रता,नमाज़,ज़कात,रोजा़,ह़ज,ज़िक्र,जेहाद और दावत शामिल हैं।
- मामलों के विषय में इस्लामी शिक्षाओं में समस्त महत्वपूर्ण विवरणों को सम्मिलित हैं,जैसेःखरीदना और बेचना,किराए पे कोई सामान

देना,किसी को अपना वकील और प्रतिनिधि बनाना,कर्ज की पुष्टि करना,निकाह व तलाक और खैती आदि के आदेश।

- राजनीति के विषय में इस्लामी शिक्षाएं,राजा परजा के आपसी संबंधों के विवरणों को शामिल हैं,जैसे बैअ़त,आज्ञाकारी,परामर्श,दुआ,एकता और आपसी भाईचारा व सहानुभूति,इसी प्रकार युद्ध व शांति की स्थिति में गैर मुस्लिमों के साथ संबंध के विवरण भी मौजूद हैं,इस्लाम,शासक को न्याय पर स्थिर रहने,अल्लाह के कल्मा को बोलंद करने के लिए जिहाद करने,इस्लामी देशों की रक्षा करने और पांच मूलभूत आवश्यक्ताओं की रक्षा करने का आदेश देता है,इनका तात्पर्यः दीन,बुद्धि,प्राण व धन एवं सम्मान हैं।
- न्याय के विषय में इस्लामी शिक्षाएं,दंड के आदेशो,हुदूद व क़िसास(बदला लेना)दियत व ताजीरात(दंड)को सम्मिलित हैं,ताकि अधिकारों की रक्षा हो सके,शांति बनी रहे और दंगाइयों को दंगे से रोका जा सके।
- शिष्टाचार एवं व्ययहार के विषय में इस्लामी शिक्षाएं,परिवारिक,वैवाहिक,सामाजिक और प्रशिक्षण संबंधों के समस्त छोटे बड़े विवरणों पर प्रकाश डालती हैं,और सुंदर चरित्र से अलंकृत होने पर उतसाहित करती हैं,जिनमें माता पिता का आज्ञा,संबंध निभाना,जीभ की पवित्रता,नजर का रक्षा,गुप्तांगों की रक्षा,पर्दा करना और ह़या को अपनाना शीर्ष हैं,तथा इस्लामी शरीअ़त,तुछ व्यवहार और बुरे गुणों से मना करती है,भाईचारे और एकता पर प्रोत्साहित करती है,विरोध और गुटबंदी से रोकता है और लोगों को एक उम्मत बन कर रहने पर जोर देती है।

इसी समावेशिता के कारण इस्लाम धर्म मोकम्मल हुआ,अल्लाह तआ़ला ने सत्य फरमायाः

(اليوم **أكملت** لكم دينكم **وأتممت** عليكم نعمتي **ورضيت** لكم الإسلام دينا)

अर्थातःआज मैं ने तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिये परिपूर्ण कर दिया है।तथा तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दिया,और तुम्हारे लिये इस्लाम को धर्म स्वरूप स्वीकार कर लिया।

और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(हर वह चीज़ जो स्वर्ग से निकट और नरक से दूर करती है,उसे तुम्हारे समक्ष स्पष्ट कर दिया गया)।[6]

अबूज़र रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते हैःहमें रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस स्थिति में छोड़ा कि कोई पक्षी भी अपने पर मारता है तो हमारे पास इसका ज्ञान होता है।[7]

8.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि मानव स्वभाव से मिलता जुलता है जिस में कोई परिवर्तन नहीं आती,और साथ ही वह आत्मा एवं शरीर की आवश्यक्ताओं को भी पूरा करती है,अल्लाह का कथन हैः

(فأقم وجهك للدين حنيفا **فطرة** الله التي فطر الناس عليها لا تبديل لخلق الله ذلك الدين **القيم** ولكن أكثر الناس لا يعلمون)

अर्थातःतो (हे नबी!)आप सीधी रखें अपना मुख इस धर्म की दिशा में एक ओर हो कर उस स्वभाव पर पैदा किया है अल्लाह ने मनुष्यों को जिस पर बदलना नहीं है अल्लाह के धर्म को,यही स्वभाविक धर्म है किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

9.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह स्वस्थ दिमाग से मेल खाता है,यह कोई आश्चर्य की बात भी नहीं,(क्योंकि इस्लाम का आधार सह़ी

---

[6]इसे तबरानी ने"المعجم الكبير"(1647)में अबूज़र रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है,अल्बानी ने " السلسلة الصحيحة "(1803)में कहाःइसकी सनद सह़ी और इसके समस्त वर्नणकर्ता विश्वसनीय हैं।

[7] इसे इब्ने ह़िब्बान ने अपनी" صحيح "(267/1)में और तबरानी ने " المعجم الكبير " (1647)में वर्णित किया है और अल्बानी ने "المعجم الكبير "(118)में और शोऐब अलअरनाऊत ने इसे सह़ी कहा है,रहिमहुमुल्लाह।

व लाभदायक आस्था,आत्मा और बुद्धि को उज्जवल कर देने वाले सुन्दर व्यवहार,स्थिति को सुधारने वाले कार्य,बहुमूल्य एवं आंशिक मामलों में प्रमाणों पर आधारित,मूर्तियों से दूर रहने,मख्लूक़ चाहे पुरूष हों अथवा महिला,उनसे दूर रहने,धर्म को अल्लाह के लिए विशेष करने और उन अंधविश्वासों व निराधार बातों से दूर रहने पर है जो चेतना एवं बुद्धि के विरुद्ध और विचारधारा को आश्चर्य करने वाली हैं,इस्लाम धर्म का आधार पूर्णतया शुचिता,प्रत्येक प्रकार की बुराई को दूर करने,न्याय करने,और हर संभव रूप से कूरता को दूर करने और संपूर्णता के भिन्न प्रकारों तक पहुंचने पर प्रोत्साहित करने पर है)।[8]

(अल्लाह और उसके रसूलों की बातों में कोई ऐसी चीज़ नहीं जो चेतना,वास्तव स्थिति और सही बुद्धि के विरुद्ध हो,और न ही अल्लाह व रसूल के आदेश में कोई ऐसी चीज़ है जो नीति और बंदों के हित के विरुद्ध हो,बल्कि यही आदेश अपने अनुयायियों को पूर्णता के सर्वोच्च श्रेणी तक पहुचाते हैं और कमी एवं हानि का सामना इस स्थिति में करना पड़ता है कि जब उनकी या उनमें से कुछ के पालन में कमी की जाती है)।[9]

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसको आयतों और नीतियों पर आधारित

---

[8] यह इब्ने सईद रही़महुल्लाहु का कथन है जो उन्होंने(الدرة المختصرة في محاسن الدين الإسلامي)पृष्ठ44—45में उल्लेख किया है,थोड़े हेर फेर के साथ,प्रकाशक: دار العاصمة —रियाज़

[9] यह इब्ने सादी रहीमहुल्लाहु का कथन है जो उन्होंने (الدلائل القرآنية في أن العلوم والأعمال النافعة العصرية داخلة في الدين الإسلامي) में उल्लेख किया है,थोड़े हेर फेर के साथ।

प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

10.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह ब्रम्हांड में बुद्धि व चेतना के प्रयोग पर उकसाती है,अविश्कार पर उभारती है और ब्रम्हांड व जीवों में मोजूद

चिन्हों पर विचार करने की ओर बोलाती है,अल्लाह का कथन हैः

(سنريهم آياتنا في **الآفاق** وفي **أنفسهم** حتى يتبين لهم أنه الحق)

अर्थातःहम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाँ संसार के किनारों में तथा स्वयं उन के भीतर।यहाँ तक कि खुल जायेगी उन के लिये यह बात कि यही सच्च है।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

(وفي **أنفسكم** أفلا تبصرون)

अर्थातः तथा स्वयं तुम्हारे भीतर(भी)।फिर क्या तुम देखते नहीं?

ज्ञात हुआ कि इस्लामी शरीअ़त बुद्धि से मैल खाती है,टकराती नहीं है,वह ऐसे तथ्यों को प्रस्तुत करती है जिनके सामने बुद्धि आश्चर्यचकित अवश्य होती है,किन्तु उन्हें असंभव नहीं समझती,इस्लामी दुनिया संघ के अंतर्गत

संचालित संस्था هيئة الإعجاز العلمى (वैज्ञानिक चमत्कार प्राधिकरण)ने कुरान व सुन्नत से निकले एजाज़(चमत्कार)के अनेक प्रमाण जमा कर दिए,चाहे यह भ्रूणविज्ञान से संबंधित एजाज़ हो अथवा खगोल से,अथवा चिकित्सा विज्ञान से हो या समुद्रि विज्ञान आदि से।एजाज़(चमत्कार)के इन प्रमाणों के सामने गैर मुस्लिम प्राकृतिक वैज्ञानिक गण आश्चर्यचकित रह गए,क्योंकि आज से चौदह सो वर्ष पूर्व कुरान व सुन्नत में इन अविष्कारों एवं अनवेषणों का उल्लेख असंभव है,हां यह कि वह अल्लाह की ओर से भेजी गइ **वह्य** हो,इस लिए कि उस युग में इन अविष्कारों के **स्रोत** लुप्त थे।यह ऐसी चीज है जिसके कारण अनेक प्राकृतिक वैज्ञानिकों ने इस्लाम को स्वीकार किया।

इस्लामी शरीअ़त की ये कुछ उत्कृष्ट विशेषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिक़ों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े काय का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

  (إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

  अर्थात:अल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।
- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।

- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य**।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखक:
मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादक:
फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامية – جزء 3

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त3

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्र्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चोच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म

में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[10]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओ में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के कुछ विशेषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

11.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि न्यायप्रिय गैर मुस्लिम जब इससे अवज्ञत होता है तो आश्चर्यचकित रह जाता है और उसे यह विश्वास हो जाता है कि वह अल्लाह की ओर से नाज़िल की गई है और यह कि समस्त मानव मिल कर भी इस जैसी सुंदर व उत्तम शरीअ़त नहीं प्रस्तुत कर सकते,यह गैर मुस्लिम की ओर से सत्य की साक्ष्य है,अल्लाह तआ़ला ने कुरान पाक के प्रति सत्य फरमाया:

(ولو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا)

अर्थातःयदि वह अल्लाह के सिवा दूसरे की ओर से होता तो उस में बहुत सी प्रतिकूल(बे मेल)बातें पाते!

12.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि जो व्यक्ति इससे अवज्ञत हो जाता है कि वह अल्लाह की ओर से है और यह असंभव है कि वह मनुष्य की ओर से हो,तो उसके कारण वह इस्लाम में प्रवेश कर जाता है,ऐसे लोगों की संख्या अनगिनत है,चाहे

---

[10]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

काफिर देशों के लोग हों अथवा इस्लामी देशों में रहने वाले गैर मुस्लिम,चाहे शिक्षित लोग हों अथवा अनपढ़ वर्ग।

13.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह मुद्रास्फीति एवं अपस्फीति के मध्य एक उदारवादी धर्म है,अल्लाह ने फरमायाः

(وكذلك جعلناكم أمة **وسطا** لتكونوا شهداء على الناس ويكون الرسول عليكم شهيدا)

अर्थातःऔर इसी प्रकार हम ने तुम्हें मध्यवर्ती उम्मत(समुदाय)बना दिया,ताकि तुम सब पर साक्षी बनो,और रसूल तुम पर साक्षी हों।

अतः इस्लाम की शिक्षाएं आस्था,प्रार्थनाएं,मामलात एवं चरित्र व व्यवहार के विषय में उदारवादी व मध्यम हैं।

14.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह आत्मा एवं शरीर की आवश्यक्ताओं के मध्य संतुलन बनाए रखने की ओर बोलाती है,अतः आध्यात्मिक एवं संसारिक जीवन के बीच कोई टकराव नहीं पाया जाता,क्योंकि शरीअ़त भिन्न प्रकार की दिली,शारीरिक एवं आध्यात्मिक प्रार्थानाओं के द्वारा आत्मा को पवित्र करने का न्योता देती है,जैसे तवक्कुल(विश्वास)भय,आशा,नमाज़,रोज़ा,ह़ज,ज़िर्क,पुण्य के कार्यों में धन खर्च करना और उन जैसी अन्य प्रार्थनाएं जो ईमान की शाखाओं में आते है और जिन की संख्या सत्तर से अधिक है।मानव जीवन शैली के विपरीत,जैसे भौतिकवादी धर्मनिरपेक्षता जो आध्यात्मिक आवश्यकताओं को बिल्कुल भुला देती और मनुष्य को केवल भौतिकवादी मखलूक़ बन कर रहने का न्योता देती है,जो केवल अपने भौतिक आवश्यकताओं के प्रति सोचे,चाहे उसके चलते उसे अपने माता पिता और परिवार से ही क्यों न हाथ धोना पड़े,यही कारण है कि धर्मनिरपेक्षता के मानने वालों के बीच परिवार व्यवस्था उजड़ गया और पुरुष एवं महिला का आपसी संबंध मित्रता मात्र तक सीमित हो कर रह गया।

भौतिकवादी धर्मनिरपेक्षता के विपरीत रहबानियत(मठवाद)का तरीका यह है कि वह शारीरिक आवश्यकता से दूर रहती है,वह इस प्रकार कि अपने अनुयायियों को विवाह से दूर रहने की दावत देती है,और अल्लाह ने जिन चीजों को ह़लाल(वैध)कर रखा है उन में से कुछ को ह़राम(अवैध)बना देती है,जैसा कि आराधनालयों के मठवासियों में ऐसा पाया जाता है।

जहां तक इस्लाम की बात है तो वह मनुष्य की आध्यात्मिक एवं शारीरिक आवश्यकताओं को स्वीकरता और उनके बीच संतुलन बनाए रखने की दावत देता है,अतः वह भौतिकवाद में पड़ने,मठवाद एवं उग्रवाद अपनाने से रोकता है और संसार में दौड़ भाग करने और पुनर्वास में भाग लेने का आदेश देता है,इसी प्रकार बन्दा और उसके रब के मध्य संबंध को उत्तम बनाने का भी आदेश देता है,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सहाबी(साथी)स्वयं को पूजा पाठ में झोंके रहना चाहते थे तो आप ने उन से फरमायाः(तुम्हारी आत्मा/प्राण का भी तुम पर अधिकार है)।[11] जब कुछ सहाबा ने कहाःवे मांस नहीं खाते,कुछ ने कहाःमैं महिलाओं से विवाह नहीं करुंगा।तीसरे ने कहाःमैं रोज़ा रखुंगा और इफतार नहीं करुंगा।चौथे ने कहाःमैं रातों को क़याम करुंगा और आराम नहीं करुंगा,तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन सबसे फरमायाः(मं मांस भी खाता हूं,महिलाओं से निकाह भी करता हूं,रोज़े भी रखता हूं और इफतार भी करता हूं,नमाज़ भी पढ़ता हूं और आराम भी करता हूं,जिसने मेरी सुन्नत से रूची हटाली वह मुझ से नहीं)।[12]

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

---

[11] इसे अह़मद(268/6)आदि ने आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा से वर्नण किया है और "المسند" (26308)के शोधकर्ताओं ने इसे ह़सन कहा है।इस ह़दीस का मूल बोखारी मुस्लिम में अबू हो़जै़फा रज़ीअल्लाहु अन्हं और अन्य सह़ाबा से वर्णित है।

[12] इसे बोखारी(5063)और इसी प्रकार मुस्लिम(1401)ने अनस बिन मालिक रज़ीअल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

15.अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता उसकी शिक्षाओं का सुंदर एवं उत्तम होना है,अतः वह हर उस कार्य की ओर बोलाती है जिसकी सुंदरता उत्तम ब़्द्धि एवं उच्च स्वभाव से ज्ञात होता है और हर उस कार्य से रोकती है जिसका घृणा उत्तम बुद्धि एवं उच्च स्वभाव से ज्ञात होती है,अल्लाह ने फरमायाः

(ومن **أحسن** من الله **حكما** لقوم يوقنون)

अर्थातःऔर अल्लाह से अच्छा निर्णय किस का हो सकता है,उन के लिये जो विश्वास रखते हैं?

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

(إن الله يأمر بالعدل **والإحسان** وإيتاء ذي القربى وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي يعظكم لعلكم تذكرون)

अर्थातःवीस्तुतः अल्लाह तुम्हें न्याय तथा उपकार और समदीपवर्तियों को देने का आदेश दे रहा है।और निर्लज्जा तथा बुराई और विद्राह से रोक रहा है।और तुम्हें सिखा रहा है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

शैख अ़ब्दुर्रह़मान बिन सादी रह़िमहुल्लाहु फरमाते हैंःशरीअ़त की शिक्षाएं,सुन्दर व्यवहार और बन्दों की हितों(का ध्यान रखने)का आदेश देती हैं,न्याय,कृपा,दयालुता और भलाई पर उकसाती हैं,क़्ता चरित्र हीनता से रोकती हैं,अतः पूर्णता की प्रत्येक वे विशेषताएं जिसे नबियों एवं रसूलों ने सही माना,उसे इस्लामी शरीअ़त ने भी सही माना और प्रत्येक वे दीनी व दुनयावी नीति जिसकी ओर पूर्व की शरीअ़तों ने बोलाया,इस्लामी ने भी उससे सहमती जताई,और हर बुराई व दंगे से रोका और दूर रहने पर प्रोत्साहित किया।[13]

[13] **थोड़े हेर फेर के साथ (الدرة المختصرة في محاسن الدين الإسلامي) से लिया गया है,पृष्ठः15,प्रकाशकः دار العاصمة –रियाज**

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेषताएं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिक़ों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

  (إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

  अर्थात:अल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।
- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य।**
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.
اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखक:

मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रहमान हिफज़ुर रहमान तैमी

موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامية – جزء 4

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त4

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चोच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार

हैं, (धर्म में) अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[14]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के कुछ विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

16.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह सारे पवित्र चीजों को ह़लाल (वैध) और सारे अस्वस्थ और गुणहीन चीज को ह़राम(अवैध)बतलाया है,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी के गुण का उल्लेख करते हुए फरमायाः

(ويُحِل لهم الطيبات ويُحرم عليهم الخبائث)

अर्थातःऔर उन के लिये स्वच्छ चीजों को हलाल(वैध)तथा मलीन चीजों को हराम(अवैध)करेंगे।

---

[14]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

17.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह मानवी(आंतरिक)पवित्रता की ओर बोलाती है,अतः इसकी शिक्षाओं से आत्मा एवं प्रणों का शुद्धीकरण होता और **हृदयों** की पवित्रता प्राप्त होती है,अल्लाह का कथन है:

(هو الذي بعث في الأميين رسولا منهم يتلو عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة)

अर्थातःवही है जिस ने निरक्षरों में एक रसूल भेजा उन्हीं में से।जो पढ़ कर सुनाते हैं उन्हें अल्लाह की आयतां और पवित्र करते हैं उन को तथा शिक्षा देते हैं उन्हें पुस्तक(कुर्आन)तथा तत्वदर्शिता(सुन्नत)की।

उदाहरण स्वरूप नमाज़ ही को लेलें,इससे आत्मा को पवित्रता एवं शांति प्राप्त होती है,जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(ए बेलाल!नमाज़ की इक़ामत कहो,हमं उससे शांति पहुंचाओ)[15] अर्थात नमाज़ के द्वारा शांति पहुंचाओ,आप उनको अज़ान व इक़ामत का आदेश देते ताकि आप को शांति मिले।

ज़कात(दान) के द्वारा धन पवित्र होता,आत्मा को कंजूसी से पवित्रता प्राप्त होती है,इसके द्वारा अल्लाह की ओर से दिए गए नेमतों(आशीर्वादों)का आभार व्यक्त किया जाता है,और आभार, **हृदय** की पवित्रता का माध्यम है,ज़कात से फकीर व मिस्कीन की आवश्यक्ता पूरी होती है,फक़ीरों एवं धनी लोगों के बीच ईर्ष्या समाप्त होता है,इस प्रकार पूरा समाज पवित्र हो जाता है।रोज़ा(उपवास)से यह भाव पैदा होता है कि समस्त कार्यों को केवल अल्लाह के लिए ही किया जाए,अतः **हृदय** दिखावा से पाक हो जाता है,अधिक खाने पीने से आत्मा के अंदर जो अहंकार,घमंड जन्म लेलेता है,रोज़ा के द्वारा उससे भी वह पवित्र हो जाता है।

---

[15] इसे अबू दाऊद(4985)और अह़मद(364/5)ने वर्नण किया है और अल्बानी ने सही़ कहा है

ह़ज(तीर्थयात्रा)में सारे ह़ाजी एह़राम(वह वस्त्र जो तीर्थयात्रो तीर्थयात्रा के समय पहनता है)पहनते हैं,जिसके द्वारा उनके अंदर से विलासिता का भावना समाप्त हो जाता है,ह़ज के पवित्र स्थानों में एक जैसे खड़े होते हैं,एक दूसरे से परिचित होते और आपसी भाईचारा पैदा होता है,एक जैसी आज्ञाकारिता के द्वारा अल्लाह की प्रार्थाना करते हैं,अतः उनके आत्मा का शुद्धिकरण होता है।

अल्लाह का ज़िर्क तो आत्माओं की पवित्रता का सबसे बड़ा मैदान है,अतः क़ुरान का सस्वर पाठ,सुबह शाम की प्रार्थनाएं और नमाज़ के पश्चात के अज़्कार का नियमित रूप से पालन,आत्मा की पवित्रता व शुद्धिकरण के सर्वश्रेष्ठ कारण हैं।

इस्लाम का नैतिक व्यवस्था आत्माओं की शुद्धिकरण का सर्वश्रेष्ठ कारण है,जैसे माता पिता का आज्ञापालन,संबंधों को जोड़ना,परिवार और पड़ोसियों के साथ सुन्दर व्यवहार और दुर्बल व गरीबों की सहायता।

इस्लामी शिक्षाओं में आत्माओं की पवित्रता एवं शुद्धिकरण की जो विशेषताएं पाई जाती हैं,उनके कुछ उदाहरण थे जो आपके समक्ष प्रस्तुत किए गए।

18.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह शारीरिक पवित्रता का भी न्योता देती है,अतः शुक्रवार के दिन और जनाबत(संभोग अथवा शीघ्रपतन के कारण अपवित्र हो जाना)के पश्चात स्नान करने,वज़ू के लिए पवित्रता प्राप्त करने,(मूत्र एवं मल के उत्सर्जन के पश्चात)जल एवं पत्थर से पवित्रता प्राप्त करने,और फितरी(स्वाभाविक)सुन्नतों पर अ़मल करने का आदेश देती है,जैसे मूंछ कतरना,दाढ़ी छोड़ना,नाखून काटना,कांख के बाल उखाड़ना और जघन के नीचे के बाल साफ करना।[16]

19.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह आसानी पैदा करती और कठिनाई को दूर करती है,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

---

[16] देखें:बोखारी(5889)और मुस्लिम(257)ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से जो ह़दीस वर्नण की है।

(يريد الله بكم **اليسر** ولا يريد بكم العسر)

अर्थातःअल्लाह तुम्हारे लिये सुविधा चाहता है,तुगी(असुविधा)नहीं चाहता। अल्लाह ने यह भी फरमायाः

(فاتقوا الله ما **استطعتم**)

अर्थातः तो अल्लाह से डरते रहो जितना तुम से हो सके।

और फरमायाः

(لا يكلف الله نفسها إلا وسعها)

अर्थातःअल्लाह किसी प्राणी पर उस की सकत से अधिक(दायित्व का)भार नहीं रखता।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(...जब मैं तुम्हें किसी चीज के पालन करने का आदेश दूं तो अपनी शक्ति के अनुसार उसका पालन करो)।[17]

20.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह एक सत्य धर्म है,नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(अल्लाह को सर्वाधिक वह धर्म पसन्द है जो सीधा और सत्य हो)[18]।खरीदने और बेचने में इस्लाम ने सत्य का आदेश दिया है,नबी सल्लल्लाहु हलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(अल्लाह तआ़ला ऐसे व्यक्ति पर कृपा करे जो बेचते समय और खरीदते समय और तकाज़ा करते समय उदारता एवं दयालुता से काम लेता है)[19]।अर्थात वह

---

[17] इसे बोखारी(7288)और मुस्लिम(1337)ने अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्नण किया है।

[18] इसे बोखारी ने كتاب الإيمان ,अध्यायःالدين يسرमें तालीक़न(टिप्पणी के रूप में)वर्णित किया है,अह़मद ने अपनी मुस्नद(266/5)में अबू ओमामा रज़ीअल्लाहु अंहु से इन शब्दों के साथ रिवायत किया हैः(मैं सीधे और सत्य धर्म के साथ भेजा गया हूं)।

[19] इसे बोखारी(2076)ने जाबिर रज़ीअल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

अपने कर्ज़ों का तक़ाज़ा करते समय फक़ीर व मुहताज पर सख्ती नहीं करता,बल्कि नरमी व दयालुता के साथ तकाजा करता है,और ग़रीब को मोहलत देता है,अल्लाह का कथन है:

(وإن كان ذو عسرة فنظرة إلى ميسرة وأن تصدقوا خير لكم إن كنتم تعلمون).

अर्थातःऔर यदि कोई असुविधा में हो तो उसे सुविधा तक अवसर दो।और अगर क्षमा कर दो(अर्थात दान कर दो)तो यह तम्हारे लिये अधिक अच्छा है,यदि तुम समक्षो तो।

इस्लाम की दयालुता ही है कि उस ने बुराई का बदला अच्छाई से देने पर प्रोत्साहित किया,अल्लाह का कथन है:

(ادفع بالتي هي أحسن)

अर्थातःआप दूर करें (बुराई को) उस के द्वारा जो सर्वोत्तम हो।

इसी प्रकार इस्लाम ने कोध पर नियंत्रण रखने और अत्याचारी को क्षमा कर देने का आदेश दिया है:

(والكاظمين الغيظ والعافين عن الناس)

अर्थातःतथा कोध पी जाते,और लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं।

इस्लाम की दयालुता का एक पक्ष यह भी है कि उसने मोमिनों के साथ विनम्रता और विनयशीलता अपनाने पर प्रोत्साहित किया,अल्लाह का कथन है:

(**واخفض جناحك** لمن اتبعك من المؤمنين)

अर्थातःऔर झुका दें अपना बाहु उसके लिये जो आप का अनुयायी हो ईमान वालों में से।

अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों की विशेषता का उल्लेख करते हुए फरमायाः

(**أذلة** على المؤمنين)

अर्थातःवह ईमान वालों के लिये कोमल होंगे।

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

21.अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह अनुकंपा के लिए प्रोत्साहित करती है,अतः अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम के प्रत्येक आदेश में दयालुता एवं अनुकंपा को अनिवार्य कर दिया है,यहां तक ज़बह़(वध)में भी,यही कारण है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़बह़ करते हुए अनुकंपा का ध्यान रखने का आदेश देते

हुए फरमायाः(अल्लाह तआ़ला ने हर चीज में इह़सान(सुंदर व्यवहार करना)अनिवार्य किया है,अतः जब तुम हत्या करो[20]और जब ज़बह़ करो तो अच्छे से करो और जब तुम ज़बह़ करो तो अपनी छुरी को तेज़ कर लिया करो और ज़बीह़ा(शव)को(ज़बह़ करते समय)आराम पहुंचाओ)।[21]

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया रह़िमहुल्लाह फरमाते हैंःयह इस बात का प्रमाण है कि हर स्थिति में अनुकंपा और दयालुता अनिवार्य है,यहां तक कि रक्त बहाते हुए भी चाहे मनुष्य का रक्त हो अथवा पशु का,अतः मनुष्य को चाहिए कि(क़िसास(दंड)ताज़ीर(धिग्दंड के रूप)में जब मनुष्य की हत्या करे तो इच्छे प्रकार से करे और पशु का रक्त बहाए तो अच्छे से बहाए[22]

इस्लाम धर्म में इह़सान(सुंदर व्यवहार)का उदाहरण यह भी है कि इसने मवेशियों के साथ नरमी करने पर उभारा है,अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सूचना दी कि एक महिला क़्यामत के दिन नरक में केवल इस लिए जाएगी कि उसने एक बिल्ली को बांध कर रखा,न तो उसे खाना खिलाया और न ही उसे आज़ाद छोड़ा कि वह पृथ्वी के कीड़े मकोड़ों से अपना पेट भर सके।

---

[20] तो अच्छे प्रकार से करो अर्थात शरई रूप से जो हत्या के योग्य हो,उसकी हत्या करो,जैसे हत्यारा और विदरोही,और यह काम शासक की ओर से किया जाए।

[21] इसे मुस्लिम(745)ने **शद्दाद** बिन औस रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

[22] الفتاوی الکبری (5/549)

मख़लूक़ के प्रति अनुकंपा का सर्वोत्तम श्रेणी यह है कि माता पिता के साथ सुंदर व्यवहार किया जाए,शरीअ़त ने क़ुरान में छ स्थानों पर इस का आदेश दिया है और इसके विपरीत(माता पिता के अवज्ञा से)रोका है,उदाहरण स्वरूप अल्लाह तआ़ला का कथन देखें:

(وقضى ربك ألا تعبدوا إلا إياه وبالوالدين إحسانا)

अर्थातःऔर (हे मनुष्य!)तेरे पालनहार ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो,तथा माता पिता के साथ उपकार करो।

अल्लाह ने सामानय लोगों के साथ भी वार्ता में नरम धुन अपनाने का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(وقولوا للناس حُسنا وأقيموا الصلاة)

अर्थातःतथा लोगों से भली बात बोलोगे,तथा नमाज़ की स्थापना करोगे।

बल्कि इस्लाम ने उस क़ैदी के साथ भी सुंदर व्यवहार का आदेश दिया है जो मुसलमानों के विरूद्ध युद्ध में था किन्तु उन्के हाथों क़ैद हो गया,अल्लाह का फरमान है:

(ويطعمون الطعام على حبه مسكينا ويتيما وأسيرا)

अर्थातःऔर भोजन कराते रहे उस(भोजन)को प्रेम करने के बावजूद,निर्धन

तथा अनाथ और बंदी को।

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफ़िकों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:
(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

  अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।
- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य**।

- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखक:
मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादक:
फैज़ुर रहमान हिफ़जुर रहमान तैमी

موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامية – جزء 5

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त5

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,र्स्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[23]

---

[23]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया क कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के एकीस विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

22.इस्लामी शरीअ़त के एक विशेषता यह है कि वह भिन्न प्रकार के शिष्टाचार,चरित्र और सदाचारों की ओर बोलाती है,अतः उसने खाने पीन,वस्त्र पहनने,विवाह,यात्रा व उपस्थिति,दयालुओं व तुच्छ व्यवहार करने वालों के साथ,परिजनों,अजनबियों,पड़ोसी और दूर के परिजनों,राजा व प्रजा,कार्यकर्ताओं,पद धारकों,पत्नि व संतान,जीवित एवं मृत्यों के प्रति व्यवहार के चरित्र सिखाए,(मृत्यों से व्यवहार का तात्पर्य)स्नान कराना,इत्र लगाना,कफन पहनाना,दफन करना और दुआ़ देना है।इसी प्रकार शत्रु और मित्र और युद्ध व शांति की स्थिति में शत्रुता रखने वालों के साथ व्यवहार करने के भी शिष्टाचार बतलाए,निष्कर्ष यह कि व्यवहार से संबंधित जो भी शिष्टाचार हो सकते हैं,इस्लाम ने उन के लिए हमें प्रोत्साहित किया,तथा उन पर पुण्य भी रखा,और प्रत्येक प्रकार के अशिष्टता व असभ्यता से मना फरमाया।

23.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह वैश्विक धर्म है,जो समस्त लोगों के लिए अनुकूल और हर प्रकार के मनुष्यों के लिए उचित है,अल्लाह तआ़ला ने अपने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमायाः

(قل يا أيها الناس إني رسول الله إليكم **جميعا**)

अर्थातःआप लोगों से कह दें कि हे मानव जाति के लोगो!मैं तुम सभी की ओर अल्लाह का रसूल हूं।

तथा पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(...नबी विशेष क़ौम(समुदाय)की ओर भेजा जाता था और मुझे समस्त मानव के लिये भेजा गया है)[24]।

24.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह समय और काल के लिए उपयुक्त है,अतः इसकी एक भी शिक्षा मनुष्य की सांस्कृतिक उन्नति के विरूद्ध नहीं है,आठ शताबदियों तक समस्त संसार पर इस्लामी संस्कृति का प्रभुत्व था,जबकि अन्य सभ्यताओं की अभी नींव भी नहीं पड़ी थी,अल्लाह तआ़ला ने सत्य फरमायाः

(ألا يعلم من خلق وهو اللطيف الخبير)

अर्थातःक्या वह नहीं जानेगा जिस ने उत्पन्न किया?और वह सूक्ष्मदर्शक सर्व सूचित है।

अर्थातःवह ईमान वालों के लिये कोमल होंगे।

---

[24] इसे बोखारी(335)और मुस्लिम(521)ने जाबिर रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्नण किया है।

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तअ़ाला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

25. अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह पूर्व के समस्त धर्मों के गुणों को सम्मिलित है,और इसमें वे बोझ और दंड नहीं हैं जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने पूर्व की शरीअ़तों के अनुयायियों पर उनके अवज्ञा के दंड के रूप में निर्धारित किया था,अल्लाह तअ़ाला ने अपने नबी की विशेषता का उल्लेख करते हुये फरमायाः

(ويضع عنهم إصرهم والأغلال التي كانت عليهم)

अर्थातःऔर उन से उन के बोझ उतार देंगे,तथा उन बंधनों को खोल देंगे जिन में वे जकड़े हुये होंगे।

इस्लामो शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेंषताऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा

और हमारे युग के मोनाफिको़(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

  (إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

  अर्थातःअल्लाह तआ़ाला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।
- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य**।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखकः

मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامية – جزء 6

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त6

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَٰه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्र्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चोच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म

में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[25]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओ में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के पचीस विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसो श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

26.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह भलाई व अच्छाई एवं सुधार का आदेश देती है और बुराई एवं दंगा से रोकती है,अल्लाह का फरमान है:

(**وَتَعَاوَنُوا** عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَى **وَلَا تَعَاوَنُوا** عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ)

अर्थात:सदाचार तथा संयम में एक दूसरे की सहायता करो,तथा पाप और अत्याचार में एक दूसरे की सहायता न करो।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:(न हानि पहुंचाना है और न हानि उठाना है)[26]।और फरमाया:(तुम में से कोई जब बुरी बात देखे तो चाहिए कि उसे अपने हाथ

---

[25]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख़ उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

[26] इसे अह़मद(313/1)आदि ने इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अन्हुमा से वर्नण किया है और "المسند" के शोधकर्ताओं ने इसे ह़सन कहा है,ह़दीस संख्या(2865)।

के द्वारा दूर करे,यदि इसकी शक्ति न हो तो अपनी जबान से और यदि इसकी भी शक्ति न हो तो अपने **हृदय** के द्वारा दूर करदे,यह ईमान का न्यूनतम श्रेणी है)[27]

27.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह अपने अनुयायियों को अधिक से अधिक शरीअ़त का ज्ञान प्राप्त करने का आदेश देती है,जिससे आत्मा को जीवन मिलती है, **हृदयों** का सूधार होता है,उस पर दुनिया व आखिरत के सौभाग्य प्राप्त होते हैं और समाज वैचारिक विचलन व विनाशकारी विचारों से सुरक्षित रहता है,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु हलैहि वसल्लम को आदेश दियाः

(وقل رب زدني علما)

अर्थातःतथा प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार!मुझे अधिक ज्ञान प्रदान कर।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(जिस व्यक्ति के साथ अल्लाह भलाई करना चाहता है तो उसे दीन की समझ प्रदान करता है)[28]

28.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह धरती को आबाद करने का आदेश देती है,अल्लाह तआ़ला का फरमान हैः

(هو الذي جعل لكم الأرض ذلولا فامشوا في مناكبها وكلوا من رزقه وإليه النشور)

अर्थातःवही है जिस ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को वशवर्ती,तो चलो फिरो उस के क्षेत्रों में तथा खाओ उस की प्रदान की हुई जीविका।और उसी की ओर तुम्हें फिर जीवित हो कर जाना है।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमायाः

(هُوَ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ واستعمركم فيها)

अर्थातःउसी ने तुम को धरती से उत्पन्न किया और तुम को उस में बसा दिया।

---

[27] इसे मुस्लिम(49)ने वर्नण किया है।

[28] इसे बोखारी(71)और मुस्लिम(1037)ने मोआ़विया बिन(पुत्र)अबी सुफयान रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्नण किया है।

अर्थात उस ने तुम्हें धरती पे पैदा किया और उसमें अपना उत्तराधिकारी बनाया,तुम पर आंतरिक एवं **बाह्य** उपकार किये,तुम्हें धरती पर शक्ति एवं प्रभुत्व प्रदान किया,तुम घर बनाते,पौधा उगाते,खेती करते और जिस चीज़ की चाहत हो बीज बोते हो और धरती से लाभान्वित होते हो।

29.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह अपने पूर्व की शरीअ़तों को निरस्त करने वाली है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

(وأنزلنا إليك الكتاب مصدقا لما بين يديه من الكتاب **ومهيمنا** عليه)

अर्थातःऔर(हे नबी)हम ने आप की ओर सत्य पर आधारित पुस्तक(क़ुर्आन)उतार दी,जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली तथा संरक्षक है।

30.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह महिलो के अधिकार,उसके मान सम्मान,उसकी भावनाओं और आवश्यकताओं का ख्याल रखती है,अतः इस्लाम ने स्त्रो के लिए जिन अधिकारों की जमानत दी है,उनकी संख्या अस्सी(80)से अधिक है,यही कारण है कि(इस्लाम की दृष्टी में)मुसलमान महिला एक सम्मानित अस्तित्व है,अपने पति,संतान और समाज के लिए वरदान है,जबकि पूर्व एवं पश्चिम में महिला का सख्त अपमान हो रहा है,चाहे वह कनया हो,अथवा माता हो अथवा बूढ़ी हो,यदि वह युवती होती है तो केवल आनंद सामर्गी का एक माध्यम मानी जाती है,यदि बूढ़ि होती है तो वुद्धाश्रम की अतिथि बन कर रहती है,उन स्त्रियों के बीच मनोवैज्ञानिक दवाओं,नशीला पदाथ,गर्भपात और आत्महत्या का जो सामान्य परंपरा है,उसकी तो बात ही न करें![29]

31.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसके आदेश रब्बानी नीतियों पर आधारित है,चाहे उन आदेशों का संबंध प्रार्थनाओं से हो अथवा मामलों से,अथवा हुदूद(इस्लाम की ओर से निर्धारित सीमाएं)एवं क़ेसास(दंड)से,और चाहे हम उन नीतियों से अवगत हों अथवा न हों,वह अपने कार्यों एव कथनों में ह़कीम व बुद्धिमान है,और शरीअ़त और तक़दीर में ह़कीम व अवगत है।[30]

---

[29] लाभ के लिये देखें: «ثمانون مظهرا من مظاهر تكريم الإسلام للمرأة،وحفظ حقوقها،واحترام مشاعرها» ,लेखकःमाजिद बिन सोलेमान अर्रसी,यह पुस्तक इंटरनेट पर उपलब्ध है।

[30] लाभ के लिये देखेंःइब्नुल **क़य्यिम** की पुस्तक "أسرار الشريعة من إعلام الموقعين" ,संग्रह एवं प्रबन्धःमोसाइद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्सलमान,प्रकाशकःدار المسير

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने क लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

32. अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसकी भविष्वाणियां सत्य साबित होती हैं,अतः भविष्य की हर वह बात जिस की सूचना शरीअ़त ने दी,वह या तो घटित हो चुकी है यह घटित हो कर रहेगी,इसका एक उदाहरण यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नजाशी की मृत्यु की सूचना उसी दिन दी जिस दिन उनकी मृत्यु हुई थी जब कि नजाशी ह़ब्शा में थे और आप नदीना में,उसके बाद आप ने उनकी गाएबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।[31]

सह़ी बोखारी में अनस से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौता के युद्ध के लिये सेना की एक इकाई भेजा,उनका सेनापति ज़ैद बिन ह़ारसा को बनाया और उन्हें यह वसीयत की कि यदि ज़ैद शहीद हो जाएं तो जाफर उनके सेनापति होंगे,यदि जाफर शहीद हो जाएं तो अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा उनके सेना प्रमुख होंगे,इसी बीच कि सह़ाबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मदीना में थे आप ने ज़ैद की मृत्यु की सूचना दी,फिर जाफर की और उसके बाद इब्ने रवाह़ा की मृत्यु की सूचना दी।जबकि आप मदीना ही में थे।[32]

---

[31] देखेंःसह़ी बोखारी(1245)और सह़ी मुस्लिम(951)रिवायतःअबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु।
[32] इसे बोखारी(1246)ने वर्नण किया है।

जब पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बदर युद्ध से पहले बदर स्थान पर ठहरे तो आप ने मुश्रिकों के कुछ सरदारों की हत्या का स्थान सुनिश्चित रूप से बतलाई,अतः अनस बिन मालिक ज़्मर बिन खत्ताब से वर्णन करते हैं किःरसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन पहले हमें बदर(में हत्या होन)वालों के गिरने का स्थान दिखा रहे थे,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमा रहे थेःइन्शा अल्लाह! कल अमुक की हत्या का स्थान यह होगा।तो हज़रत ज़्मर रज़ीअल्लाहु अन्हु ने कहाःउस हस्ती की शपथ जिस ने आप सल्लल्लाहु अलैहि सवल्लम को सत्य के साथ भेजा!वे लोग उन स्थानों के किनारों से थोड़ा भो इधर उधर नहीं मरे थे जिन को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निर्धारित किया था।[33]

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे य़ग के मोनाफिकों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

  अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।

[33] इसे मुस्लिम(2873)ने वर्नण किया है।

- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य।**
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखकः
मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादकः
फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامية – جزء7

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त7

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्र्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[34]

---

[34]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के बत्तीस विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

33.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि जो व्यक्ति इस्लाम में प्रवेश करता है,यदि उसके पास बुद्धि हो तो अपने धर्म से नाराज व ऊब कर उससे नहीं फिरता,इस्लामी इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ,क्योंकि यह बात गुजर चुकी है कि इस्लामी शिक्षाएं बुद्धि एवं स्वभाव से मिलती जुलती हैं,वे मनुष्य की आध्यात्मिक एवं शारीरिक प्रत्येक प्रकार की आवशयक्ताओं की पूर्ति करती हैं,अल्ह़मदोलिल्लाह तर्क सिद्ध हो गया और मार्ग उज्जवल हो गया।

34.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि जो व्यक्ति इसे चुनैती दे,यह उस पर प्रभावी हो जाती है,यही कारण है कि कोई व्यक्ति क़ुरान की किसी एक आयत अथवा पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की किसी एक ह़दीस को गलत सिद्ध नहीं कर सका,न ही कोई व्यक्ति क़ुरानी आयतों जैसी कोई एक आयत ही प्रस्तुत कर सका,कोई भी व्यक्ति ऐसी शिक्षाएं प्रस्तुत नहीं कर सकता जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं से निकटता एवं सादृश्य रखतो हो,अल्लाह ने सत्य फरमाया:

(ولو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا)

अर्थातःयदि वह अल्लाह के सिवा दूसरे की ओर से होता तो उस में बहुत सी प्रतिकूल(बे मेल)बातें पाते।

35.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह अपने अनुयायियों के बीच न्याय करता है,अतःइस्लामी शिक्षाएं इस बात को सिद्ध करती हैं कि समस्त मानव एक ही पुरूष एवं स्त्री(आदम व हव्वा)से पैदा हुए हैं।वह एक तराजू जो समस्त मानव के लिए मानक है वह तक़्वा(ईश्वर भक्ति)है,न कि रंग,अथवा समाजी अथवा भौतिकवादी स्थिति,अल्लाह तअ़ला ने फरमायाः

(يا أيها الناس إنا خلقناكم من ذكر وأنثى وجعلناكم شعوبا وقبائل لتعارفوا إن أكرمكم عند الله أتقاكم إن الله عليم خبير)

अर्थातःहे मनुष्यो!हम ने तुम्हें पैदा किया है एक नर–नारी से।तथा बना दी हैं तुम्हारी जातियाँ तथा प्रजातियाँ ताकि एक दूसरे को पहचानो।वास्तव में तुम में अल्लाह के समीप सब से अधिक आदरणीय वही है जो तुम में अल्लाह से सब से अधिक डरता हो।वास्तव में अल्लाह सब जानने वाला सब से सूचित है।

36.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसके मानने वालों को ही सहायता मिलती है,अल्लाह का कथन हैः

(إنا **لننصر رسلنا والذين آمنوا** في الحياة الدنيا ويوم يقوم الأشهاد)

अर्थातःनिश्चय हम सहायता करेंगे अपने रसूलों की तथा उन की जो ईमान

लोयें,संसारिक जीवन में,तथा जिस दिन साक्षी खड़े होंगे।

37.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह क़्यामत तक बाकी रहने वाली है,अतःमोआ़विया रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(मेरी उम्मत(समुदाय)में स्वेद एक समूह ऐसा होगा जो अल्लाह की शरीअ़त को लागू रखेगा,उन्हें अपमान अथवा उनके विरोद्ध करने वाले उन्हें कोई हानि नहीं पहुंचा सकेंगी यहां तक कि अल्लाह का आदेश आजाएगा और वे हमेशा लोगों पर प्रभावी रहेंगे)[35]।

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ाला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्धितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

38. अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक

विशेषता यह है कि इसके अनुयायी समस्त कौ़मों से अच्छे हैं,अल्लाह का कथन हैः

---

[35] इसका संदर्भ गुजर चुका है।

(كنتم **خير أمة** أخرجت للناس تأمرون بالمعروف وتنهون عن المنكر وتؤمنون بالله)

अर्थातः तुम सबसे अच्छी उम्मत हो,जिसे सब लोगों के लिये उत्पन्न किया गया है कि तुम भलाई का आदेश देते हो,तथा बुराई से रोकते हो,और अल्लाह पर ईमान(विश्वास)रखते हो।

बहज़ बिन ह़कीम *عن ابیہ عن جدہ* की सनद से वर्णित है कि उन्हों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला के कथनः

(كنتم خير أمة أخرجت للناس)

की व्याख्या करते हुए सुनाः(तुम सत्तर उम्मतों का अनुपूरण हो,तुम अल्लाह के निकट उन सबसे अच्छा और सबसे अधिक सम्मानित हो)[36]।

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिक़ों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

---

[36] इस ह़दीस को तिरमिज़ी(3001),इब्ने माजा(4288),अह़मद(3/5)और बैहक़ी(5/9)ने वर्नण किया है और"अलमुस्नद"के शोधकर्ताओं और अल्बानी ने इसे ह़सन कहा है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा कर–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य**।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखकः

मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامية – جزء 8

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त8

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्र्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[37]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने

---

[37]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेशों में हम ने इस्लामी शरीअ़त के लगभग चालीस विशेषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

39.इस्लामी शिक्षाओं की एक विशेषता यह है कि हर वह कथन जो इसके विरुद्ध है,वह असत्य है,जो प्रतिस्पर्धा के समय सत्य के सामने टिक नहीं सकता,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

(وقل جاء الحق وزهق الباطل إن الباطل كان زهوقا)

अर्थातःतथा कहिये कि सत्य आ गया,और असत्य ध्वस्त निरस्त हो गया,वास्तव में असत्य को ध्वस्व निरस्त होना ही है।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

(قل جاء الحق وما يُبدئ الباطل وما يعيد)

अर्थातःआप कह दें कि सत्य आ गया।और असत्य न (कुछ का)आरंभ कर सकता है और न (उसे)पुनः ला सकता है।

अर्थात उसका मामला म्लान हो जाएगा और उसकी महिमा एवं गौरव जाती रहेगी,अतः वह न पहले कुछ कर सका और न कर सकेगा।[38]

40.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह समस्त चुनौतियों के समक्ष स्थिर,चल रहे और स्थायी है, **यद्यपि** उस पर स्वेद आकमण क्यों न हों,और हर काल में शत्रु इससे युद्ध करते ही क्यों ने रहें,इस्लामी शरीअ़त में न अपक्षय आया और न वह परिवर्तन आती रहती है और वह स्थायी विनाश की ओर बढ़ रहे हैं।

एतिहासिक रूप से इस्लामी शरीअ़त की स्थिरता का एक दृश्य यह है कि वह वैचारिक विचलनों के सामने दृढ़ रहा है,उदाहरण स्वरूप ईसाइयत का लहर,जिसका **उद्देश्य** पूरे संसार को ईसाई बनाना और उन्हें सलीब की प्रार्थाना पर उभारना है,इस प्रकार ईसाइयत को बढ़ावा देने वाले देशों के पास अधिक संभावनाएं हैं,किन्तु उनके यहां इस्लाम में प्रवेश होने वालों का अनुपात,ईसाइयत और अन्य विकृतिय धर्मों और मानव धर्मों को स्वीकार करने वालों से अति अधिक है।

इतिहास में इस्लामी शरीअ़त के स्थायित्व का एक दृश्य यह भी है कि वह धर्मनिरपेक्षता की लहर के समक्ष दृढ़ संकल्प रही,जिसका **उद्देश्य** जीवन के समस्त विभागों से धर्म को निकाल के केवल बंदा का अपने रब से संबंध तक उसे सीमित रखना है।

---

[38] यह इब्ने सादी रहीमहुल्लाहु का कथन है जो उन्हों ने उपरोक्त आयत की व्याख्या में लिखा है।

इतिहास में इस्लामी शरीअ़त के स्थिरता का एक दृश्य यह भी है कि हिंसा एवं अव्यवस्था जैसी लहरों के सामने पहाड़ बन कर खड़ी रही,जिन का **उद्देश्य** चंद इस्लामी देशों के शासकों को अपदस्थ करना था,ताकि उन लहरों के मानने वाले वहां के शासन पर कब्जा जमा सकें,और अपने अनुमान के अनुसार उन देशों को शांतिपूर्ण और खुशहाल देशों में बदल सकें,दुनिया ने यह देखा कि जिन देशों में उन्हों ने अपनी योजनाएं लागू किये,वहां उन निराधार लहरों के ये प्रभाव प्रकट हुए कि स्थिति बुरा से अति बुरा हो गया,अवैध चीजों को वैध कर दिया गया,रक्त का दरिया बहाया गया,सम्मान एवं गरिमा नीलाम हुई और काफिर मुसलमानों की इस स्थिति को देख कर प्रसन्न हए और उसको"वसंत"का नाम दिया।

41.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि जो भी उससे शत्रुता मोल लेता है वह अंततः हार व रुसवाई से दोचार होता है,चाहे वह सक्ताधारी लोग हों,अथवा पद धारक लोग,अथवा वैचारिक विचलनों एवं **कट्टरपंथी**,साम्यवाद का अंजाम किया हुआ?कौ़मियत व बेसत कहां गई?ये सारी लहरें हवा हो गई,इसके विपरीत,14 शताब्दियों पर सम्मिलित चुनौतियों के बावजूद क्या इस्लाम मिट पाया?धर्मयुद्ध के प्रभाव से इस्लाम पर कोई आंच आया?और किया यूरोपीय साम्राज्यवाद के प्रभाव में इस्लाम बेनिशान होगया?क्या इराक़ पर तातारी आक्रमणों ने इस्लाम को मिटा दिया?अह्वाज़ और इराक़ पर राफज़ी आक्रमण से इस्लाम खत्म हो गया?धर्मनिरपेक्षता के वैचारिक

आकर्मण से प्रभावित हो कर इस्लाम का अस्तित्व समाप्त हो गया?नहीं,अल्लाह की क़सम!इसकी स्थिरता और बढ़ गई।अल्लाह ने सत्य फरमायाः

(وقل جاء الحق وزهق الباطل إن الباطل كان زهوقا)

अर्थातःतथा कहिये कि सत्य आ गया,और असत्य ध्वस्त निरस्त हो गया,वास्तव में असत्य को ध्वस्त निरस्त होना ही है।

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

42. इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि जो देश और समुदायें उसे लागू करें,उनसे अल्लाह ने दुनिया व आखिरत के सौभाग्य का वादा फरमाया है,ताकि वह दुनिया में शांति और सम्मान के साथ खुशहाल जीवन गुजारें और आखिरत में उनके लिये बड़े बदले व पुण्य का वादा है।किन्तु जो देश और क़ौमें अल्लाह की शरीअ़त से मुंह मोड़ेंगी वह कठिनाई व नष्ट से दो चार होंगी,चाहे सबसे शक्तिशाली एवं सबसे विद्रोही देशों में से ही क्यों न हों।वास्तविक्ता इस की गवाह भी है,जब पहले के लागों ने इस सत्य को समझा और शरीअ़त को लागू किया तो आठ शताब्दियों तक धर्ती पर इस्लामी संस्कृति का बोल बाला रहा और उन्हें अल्लाह तआ़ला की यह खुशखबरी मीलीः

(وعد الله الذين آمنوا منكم وعملوا الصالحات **ليستخلفنهم** في الأرض كما استخلف الذين من قبلهم **وليمكنن** لهم دينهم الذي ارتضى لهم وليبدلنهم **من بعد خوفهم أمنا** يعبدونني لا يشركون بي شيئا)

अर्थातः अल्लाह ने वचन दिया है उन्हें जो तुम में से ईमान लायें तथा सुकर्म करें कि उन्हें अवश्य धरती में अधिकार प्रदान करेगा जैसे उन्हें अधिकार प्रदान किया जो इन से पहले थे,तथा अवश्य सुदृढ़ कर देगा उन के उस धर्म को जिसे उन के लिये पसॅद किया है,तथा उन (की दशा)को उन के भय के पश्चात शान्ति में बदल देगा,वह मेरी इबादत(वंदना)करते रहें और किसी चीज़ को मेरा साझी न बनायें।

किन्तु जब उन्हों ने अल्लाह के दीन से मुंह मोड़ा तो अल्लाह ने उन से नेतृत्व छीन ली और उन पर शत्रुओं को अधिरोपित कर दिया,जैसा कि आज हम इस को देख रहें हैं।

- इस्लामी शरीअ़त की ये चालीस **अद्‌भुत** विशेषताएं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छुपा अल्लाह की नीति से भी अवज्ञत हो जाए गा और हमारे जमाने के मोनाफिक़ों(पाखंडी)अर्थात नास्तिकों की गुमराही भी उस पर स्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों को कोसते हैं और यह दावा करते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

  अल्लाह तआ़ला हमें उनके संदेहों से सुरक्षित रखे।

- प्रिय पाठक!जो व्यक्ति इन विशेषताओं से अवगत हो,वह आसानी से यह समझ सकता है कि तेजी से लोगों के इस्लाम में प्रवेश करने के पीछे किया भेद छिपा है,विशेष रूप से उन देशों में जो भौतिक रूप से विकसित हैं और नये नये आविष्कारों एवं खोजो में प्रसिद्ध है,अल्लाह ने सत्य फरमायाः

  (سنريهم آياتنا في الآفاق وفي أنفسهم **حتى يتبين لهم أنه الحق**أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شهيد)

  अर्थातःहम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाॅ संसार के किनारों में तथा स्वयं उन के भीतर।यहाॅ तक कि खुल जायेगी उन के लिये यह बात कि

यही सच्च है।और क्या यह बात पर्याप्त नहीं कि आप का पालनहार ही

प्रत्येक वस्तु का साक्षी है।

आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थात:अल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य**।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखक:

मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रहमान हिफ़जुर रहमान तैमी